वीर शिवाजी



— श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

शौर्य और धर्मनिष्ठा के प्रतीक— वीर शिवाजी

शास्त्रों का यह वचन कि 'बच्चे के संस्कारों का निर्माण गर्भ काल से ही होने लगता है, सर्वथा सत्य एवं माननीय है। साथ ही इतना और जोड़ा जा सकता है कि वातावरण एवं परिस्थितियों का प्रभाव भी उस पर कम नहीं पड़ता। गर्भकाल में माता-पिता के और विशेष तौर से माता के आचरण-विचार का प्रभाव, बच्चे के संस्कारों पर अपनी गहरी छाप छोड़ता है। जन्मोपरांत वह उनके आचरण तथा विचार और चारों तरफ की परिस्थितियाँ एवं वातावरण से तद्नुसार तत्त्वों को ग्रहण करता है और करता रहता है। बच्चे को जिस आचरण, आचार-विचार और मनोभावों का बनाना अभीष्ट हो, माता-पिता को चाहिये कि वे स्वयं वैसे ही बनें और तदनुकूल वातावरण बच्चे के आस-पास उपस्थित रखने का प्रयत्न करें।

कौन कह सकता है कि छत्रपति महाराज शिवा जी के निर्माण में उनके माता-पिता तथा तत्कालीन उनके आस-पास का वातावरण और परिस्थितियों का सहयोग न रहा हो। उनकी माता एक वीर स्वभाव तथा धर्मपरायण महिला थीं। दृढ़ता, धैर्य और साहस उनके जीवन की अमूल्य निधि थी। उनके पिता एक साहसी सैनिक, सेनानायक और नीतिज्ञ राज्य संचालक थे। उपस्थित के प्रति प्रत्युत्पन्न बुद्धि और समयानुकूल सूझ-बूझ के साथ-साथ उन्होंने विवेक बल पर अपनी दृष्टि और भविष्य-भावना को एक अच्छी सीमा तक विकसित तथा प्रखर बना रखा था। इन्हीं गुणों के कारण ही तो वे एक साधारण कृषक से राजा और सामान्य मनुष्य से शाही दरबारों में ऊँचे मनसबदार बन सके थे।

उस समय की परिस्थिति के वातावरण में चारों ओर यवन शासकों के अत्याचारों, धर्म-संकट और हिंदुओं, हिंदु सभ्यता, संस्कृति, धर्म तथा प्रतिज्ञा की रक्षा की चिंता व्याप्त थी। चारों ओर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युद्ध, ध्वंस, विनाश, रक्त-पात, अस्थिरता, आतंक उत्थान तथा पतन की घटनाएँ हो रही थीं। राज्य बनते-बिगड़ते अधीन और स्वाधीन हो रहे थे। एक छत्र शासन के अभाव में देश भर में अराजकतापूर्ण मनमानी का दौर-दौरा था। संधि, विग्रह, संगठन एवं विघटन एक सामान्य आचरण जैसा बन गया था। चातुर्य, चापल्य तथा चौकसी आवश्यक थी।

शिवाजी के माता-पिता को भी इसी वातावरण तथा इन्हीं परिस्थितियों के बीच संघर्ष एवं साहस का जीवन बिताना पड़ा था। ऐसे माता-पिता के माध्यम से और इन्हीं परिस्थितियों से प्रभावित वातावरण में छत्रपति शिवाजी का जन्म हुआ था। उनका साहसी, वीर, धीर, दृढ़ी, उत्साही, दूरदर्शी, सहिष्णु, सतर्क एवं हिंदुत्त्ववान् होना कोई आश्चर्य अथवा संयोग की बात नहीं थी। उनके माता-पिता, उनकी परिस्थिति और तत्कालीन वातावरण उनके उस रूप का बड़ा कारण रहे हैं। इसके अतिरिक्त जो आवश्यक और शेष था, उसका सृजन अपनी बुद्धि, विवेक और आत्मा से उन्होंने स्वयं कर लिया था।

शिवाजी का जन्म चुनार के अंतर्गत शिवनेरी दुर्ग में १० अप्रेल सन् १६२७ को हुआ था। उनके पिता शाहजी की जागीर तथा उनका स्थायी निवास पूना और सूपा में था। किंतु उस समय वे निजामशाही दरबार में मनसबदार थे और उसी की ओर से मुगलों के विरुद्ध युद्ध में संलग्न थे। शाहजी के श्वसुर लखूजी जादवराय भी पहले निजामशाह के ही सहायक थे, किंतु अपनी बेटी जीजाबाई के बलात् विवाह के कारण वे निजामशाह और अपने जामाता शाह जी दोनों से द्वेष करते थे। अपने इसी व्यक्तिगत विद्वेष के कारण लखूजी जादवराय उस युद्ध संकट के समय निजामशाह और उसके योद्धा शाहजी का साथ छोड़कर मुगलों से जा मिला था। वह इस अवसर का लाभ उठाकर शाहजी को बंदी बनाना और अपने द्वेष को पूरा करना चाहता था। व्यक्तिगत हानि-लाभ और द्वेष-प्रेम से प्रभावित पुरुष इसी प्रकार तो देश तथा राष्ट्र का अहित कर इतिहास में कपटी और विश्वासघाती के नाम से कलंकित किये जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने श्वसुर लखूजी जादवराय की इस अनीति के कारण शाहजी को माहुली का किला खोकर वहाँ से अपनी गर्भवती पत्नी को लेकर भागना पड़ा था। शाहजी जीजाबाई को घोड़े पर बिठाल कर ले चले। पर गर्भ संभार के कारण उनके घोड़े पर कूछ दूर चलना भी असंभव हो गया। शाहजी के सामने एक समस्या खड़ी हो गई। वैसे तो वे उनको किसी और साधन अथवा घोड़े से ही धीरे-धीरे ले जा सकते थे, किंतु उस समय वे वैसा कर सकने की स्थिति में नहीं थे। लखूजी जादवराय बड़ी तेजी से उनका पीछा कर रहा था। दुश्मन के हाथ में पड़कर अपमानित होना उन्हें किसी प्रकार भी सह्य न था और गर्भवती जीजाबाई को क्षति अथवा कष्ट पहुँचाना भी अयोग्य तथा अवांछित था। बड़ी विषम स्थिति थी। किंतु साहसी व्यक्ति का भी निराश अथवा हीन-हिम्मत हो जाने से विवेक मंद हो जाता है और प्रत्युत्पन्न बुद्धि नष्ट हो जाती है। जिसमें फिर न कोई उपाय सूझ पड़ता है और न तन-मन काम देता है। मनुष्य किंकर्तव्यमूढ़ होकर संकट की भेंट चढ़ जाता है। उन्होंने जीजाबाई को हिम्मत रखने को कहा और क्षण भर सोचकर बचाव तथा बनाव का मार्ग खोज लिया।

चारों ओर के मार्गों और भौगोलिक भूमिका पर दृष्टिपात करते ही उन्हें स्मरण हो आया कि पास ही चुनार का किला, जिसका जागीरदार श्रीनिवास राव उनका एक मित्र है। बस, फिर क्या था—उन्होंने तुरंत घोड़े की बाग चुनार की ओर मोड़ दी। कुछ ही देर में वे चुनार जा पहुँचे। श्री निवासराव अपने माननीय मित्र को अकस्मात् आया देखकर प्रसन्न हो उठा और उनके स्वागत तथा निवास-विश्राम के लिए आदेश देने लगा। पर शाहजी ने उसे तुरंत रोकते हुए कहा—एक क्षण का भी समय नहीं है। लखूजी पीछा कर रहे हैं—बस यह अमानत तुम्हें सौंपता हूँ, इसकी साज-संभाल करना। इतना कह कर उन्होंने जीजाबाई को श्री निवासराव को सौंपा और तुरंत किले से निकलकर अभीष्ट दिशा की ओर तिरोधान हो गये। श्री निवासराव ने जीजाबाई को सुरक्षित और साधनापूर्ण शिवनेरी के दुर्ग में भेज दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिवनेरी में जीजाबाई अभी आश्वस्त भी न हो पाई थी कि तब तक लखूजी जादवराय आ पहुँचा। लोगों ने सूचना दी कि शाहजी तो यहाँ से तत्काल चले गये। किले में केवल उनकी पत्नी जीजाबाई ही हैं। द्वेष-मूढ़ पिता ने उस समय अपनी बेटी को केवल शाहजी की वंशधारिका पत्नी समझा और बोला—"मैं उसको ही अपने साथ ले जाऊँगा, निश्चय ही उस समय वैसा करते हुएं उसके मन में यह दुर्भाव रहा कि जब वह शाहजी की पत्नी को गिरफ्तार करके ले जायेगा और मुगलों की बंदिनी बनाकर यातनाओं की व्यवस्था करेगा, तो शाहजी अपनी पत्नी तथा गर्भस्थ संतान की रक्षा-भावना से मेरी शरण अवश्य आयेगा और तब मैं उससे अपना प्रतिशोध ले लूँगा। धिक्कार है—उस ईर्ष्या और द्वेष को, जो मनुष्य को इस सीमा तक मूढ़ तथा क्रूर बना देता है और खेद है उस दयनीय व्यक्ति पर जो विवेक के शत्रु इन दुर्भावों को प्रश्रय दिया करता है।

लोगों ने उसके कथन के पीछे प्रच्छन्न मनोभाव को समझ लिया और विनीत वाणी में आश्चर्यपूर्वक बोले—"लखूजी ! आप यह क्या कह रहे हैं ? अपनी बेटी को बंदी बनायेंगे ? शत्रु तो आपके शाहजी हैं। जीजाबाई तो सर्वथा निरपराधिनी हैं। उस समय बलात् विवाह में उनका क्या दोष है ? आपने उस रंग-पंचमी के दिन साथ-साथ खेलते-हँसते अबोध बाल-बालिका शाहजी और जीजाबाई को देखकर निवेदन में कह दिया कि कैसी सुंदर जुगुल जोड़ी है—जीजाबाई क्या तुझे यह दूल्हा पसंद है ? आपके उस विनोद को पकड़कर, शाहजी के पिता मालोजी ने, उपस्थित खंभों के समर्थन से वाग्दान का स्वरूप दे दिया। आपने तब भी उसे विनोद ही समझा और यथार्थ में विवाह करने से इनकार कर दिया। इसीलिए तो अनबूझ विनोद और अनावश्यक वक्तव्य का शास्त्रों में निषेध किया गया है क्योंकि यदा-कदा, देशकाल और व्यक्ति के आधार पर बात का बतंगड़ और विनोद का विग्रह बन जाया करता है। मालोजी ने स्थिति का लाभ उठाकर वही किया और अंत में निजाम शाह को प्रेरित कर आपके निषेध को विवश स्वीकृति में बदलवा दिया। आप निजामशाह के अधीन और प्रभाव में थे। न चाहते हुए भी अपनी पुत्री जीजाबाई को मालोजी के पुत्र शाहजी से ब्याहना पड़ा। इसमें बेचारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीजाबाई का क्या दोष ? आप तो बुद्धिमान् हैं। सोचना चाहिए कि आप जीजाबाई को बंदी बनाकर शाहजी से जिस अपमान का बदला लेना चाहते हैं, मुगलों द्वारा अपमानित आपकी बेटी उस अपमान से लाखों गुने बड़े अपमान की साक्षी न बनेगी। ऐसी दशा में आपकी आत्मा शांत रह सकेगी ? आपका स्वाभिमान उस अपमान को सहन कर सकेगा ? आप जीजाबाई के पिता हैं, यह न भूलना चाहिए और फिर इसमें शाहजी का भी क्या दोष है ? बात तो आप और मालोजी के बीच की है। वह इस संसार से चले गये। अपना द्वेष भी निकाल फेंकिये और उस विवाह को दैवयोग अथवा ईश्वरीय इच्छा समझिये। जो होना था हो गया और सच पूछा जाये तो कुछ बुरा भी नहीं हुआ। हम लोगों का तो यही मत है। आगे आप मालिक हैं, जो ठीक समझें करें।

बात उपयुक्त थी। जीजाबाई के प्रति लखूजी का द्वेष मिटा और उनका विवेक वापस आया। अब वे प्यारपूर्वक बेटी के पास गये और बोले—"जीजा, चल मेरे साथ घर चल। वहाँ आराम से रहना। यहाँ असहाय की तरह पड़े रहने से, इस दशा में बड़ा कष्ट होगा। पर जीजाबाई तो पतिभक्ता वीर पत्नी थीं उन्होंने स्पष्ट इनकार कर दिया। युद्ध के संकट में पड़े पति के कष्ट-क्लेशों का विचार न कर स्वयं अपने लिए सुख-सुविधा की इच्छा करना उन्होंने धिक्कार के समान समझा। लखूजी जादवराव विवश होकर वापस चले गये।

इस स्थिति, परिस्थिति और मनःस्थिति के बीच शिवाजी का जन्म हुआ था। फिर भला क्यों न उनमें समयोपयुक्त संस्कारों का सृजन होता और वे क्यों न वैसे बन जाते ? आगे चलकर जैसे थे बने। शिवनेरी दुर्ग की अधिष्ठात्री देवी शिवाई के नाम पर ही माता ने उनका नाम शिवा रखा, क्योंकि धर्मनिष्ठ जीजाबाई ने अपने बेटे को देवी का प्रसाद ही समझा।

भविष्यानुकूल जन्म के साथ-साथ शिवाजी की शिक्षा-दीक्षा भी उसी के समानांतर होती चली गई। जीजाबाई एक सुशिक्षित महिला थीं और उन्होंने अपनी शिक्षा का उपयोग पुत्र के संस्कार ढालने में किया। उनकी इच्छा थी कि उनका बेटा धीर, वीर, साहसी और धर्मरक्षक बने। इसलिए उन्होंने बालक शिवा को प्रारंभ से ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वीर-गाथाओं और गीतों को लोरी के रूप में सुनाना प्रारंभ कर दिया और जब वह कुछ बड़े हो गये तो स्वयं ही अक्षर ज्ञान कराया, आप ही अर्थ और यथार्थपूर्वक उनको रामायण, महाभारत तथा गीता आदि का पारायण कराया। इसके अतिरिक्त वे शिवाजी को धर्म के तत्त्व, उसकी वर्तमान दशा और उसकी रक्षा की आवश्यकता भी बतलाती रहती थीं। उन्होंने शिवाजी को भारत में एकछत्र स्वतंत्र हिंदू-राज्य का स्वप्न भी दिया। चरित्र और आचरण की शक्ति से सुज्ञ बनाकर संगठन और रीति-नीति के महत्त्व से अवगत कराया। इस प्रकार जीजाबाई ने शिक्षा की ऐसी दिशा कोई छोड़ी, जो शिवाजी के अभ्युदय के लिए आवश्यक थी। ऐसी विदुषी तथा बुद्धिमती माता का पुत्र धीर, वीर, धर्मरक्षक न बनकर और क्या बन सकता था ? शिवाजी की निर्विकार तथा अनुकूल मनोभूमि पर माता के बोये बीज जी भरकर प्रस्फुटित, पल्लवित और सफलीभूत हुए। जिनको चरितार्थ कर वे इतिहास के पृष्ठों में सदा-सर्वदा के लिए अमर तथा आदृत हो गए।

मुगलों तथा बीजापुर की सम्मिलित शक्ति ने निजामशाही को परास्त कर दिया और शाहजी से संधि कर ली। संधि के अनुसार अहमद नगर का इलाका मुगल साम्राज्य में चला गया और शाहजी को अपनी पूना और सूपा की जागीर के साथ बीजापुर के दरबार में मनसब मिल गया। उन्होंने अपने तीन वर्षीय पुत्र शिवाजी को और पत्नी जीजाबाई को पूना भेजकर वहाँ की जागीर का प्रबंध दादाजी कोणदेव नाम के वयोवृद्ध योग्य व्यक्ति को सौंप दिया। इस प्रकार शिवाजी अपनी माता के साथ दादाजी कोणदेव की संरक्षकता में, और शाहजी स्थायी रूप से बीजापुर में रहने लगे।

दादाजी कोणदेव बड़े ही दूरदर्शी तथा देशभक्त व्यक्ति थे। यवनों के धार्मिक अत्याचार देख-सुनकर उनको बड़ा दुःख होता था। वे चाहते थे कि भारत के हिंदू राजा एक होकर देश से यवन-सत्ता को समाप्त कर एकछत्र हिंदू राज्य की स्थापना करें। इसके लिए उन्होंने यथासाध्य प्रयत्न भी किया। किंतु पाया कि स्वार्थ और दंभ ने हिंदू-नरेशों को न केवल निर्बल ही बना दिया है, बल्कि हतबुद्धि भी कर दिया है। उनका विवेक और धर्मनिष्ठा समाप्त हो गई है। उनकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इच्छा थी कि कोई ऐसा तेजस्वी नायक उत्पन्न करें, जो देश-धर्म की रक्षा के लिए निःस्वार्थ भाव से प्रयत्न करें। टूटते हुए देवालयों और उतरते हुए शिखा-सूत्रों की रक्षा करे।

तभी शिवाजी को अपने संरक्षण में पाकर उनके मन में आशा का संचार हो उठा और वे सोचने लगे कि, क्यों न बालक को वैसे ही संस्कारों, आचरण तथा भावनाओं में ढाला जाए जिस प्रकार के चरित्र की इस समय आवश्यकता है। यदि चाणक्य एक सामान्य बालक को चंद्रगुप्त मौर्य बना सकते थे, तो उन्हीं प्रयत्नों द्वारा मैं क्यों बालक शिवा में उन योग्यताओं का विकास नहीं कर सकता ? सत्य से संचालित प्रयत्नों में अमोघ शक्ति रहती है और जन-कल्याण की ज्वलंत भावनाओं में अनंत संभावनाएँ। मुझे अपना कर्तव्य करना चाहिए और मैं करूँगा भी, आगे प्रभु की इच्छा। फलाफल का निर्णय उसके हाथ में है। ऐसा सोचकर उन्होंने शिवाजी की शिक्षा-दीक्षा का शुभारंभ उसी दिशा में कर दिया।

माता जीजाबाई ने बीज बोये थे। दादाजी कोणदेव ने खाद-पानी देकर उन्हें विकसित करना प्रारंभ किया। जीजाबाई ने वीरतापूर्ण गीत और गाथाएँ सुनाई थीं। दादाजी कोणदेव ने उनका अभ्यास कराया। सबसे पहले उन्होंने बालक शिवा का तलवार से परिचय कराया। एक छोटी-सी कृपाण देकर और एक खुद लेकर कहते—हाँ भाई, हमारा-तुम्हारा द्वंद्व-युद्ध हो जाये और वे इस प्रकार बहुत देर तक उन्हें तलवार का खेल खिलाते रहते। छोटी-सी कमान और छोटे-छोटे तीर देकर चलाना और निशाना मारना सिखाते। बर्छी की पकड़ और प्रक्षेपण का अभ्यास कराते। छोटे से घोड़े पर चढ़ाकर उन्हें अपने साथ सैर कराने ले जाते और तभी उन्हें देश का इतिहास, भूगोल तथा राजनीतिक दशा को कहानी की तरह सुनाते और उनमें यह भावना प्रौढ़ करते कि आगे चलकर उनको अपने इस भारत भूखंड को एकछत्र करना है और इसके इतिहास का कलंक धोना है। इसी अवसर पर वे तल्लीन बालक शिवा को राजनीति, राज्य-प्रबंध और राजनीतिक मोहरों और मोर्चों का स्वरूप का ज्ञान कराते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दादाजी कोणदेव कभी-कभी उन्हें जंगल में ले जाते और अपनी सतर्कता में अकेला छोड़कर उनमें साहस, धैर्य तथा प्रत्युत्पन्नता उत्पन्न करते थे। उनमें जंगलों तथा पहाड़ों में रास्ता खोजने और बनाने की योग्यता का विकास करते। उनके समवयस्क साथियों को लेकर सेना का संगठन, संचालन, विभाजन, नियुक्ति, व्यूह, आक्रमण तथा संग्राम के खेल खिलाते। दादाजी कोणदेव की इस शिक्षा का फल यह हुआ कि जब शिवाजी सयाने होकर आत्म-अस्तित्व के प्रति सज्ञान हुये, तो उन्होंने अपने को घोड़े की पीठ पर स्थित शस्त्रदक्ष सैनिक तथा सेनापति के रूप में पाया। उन्हें ऐसा लगा मानो उन्होंने इसी सज्जा और इन्हीं योग्यताओं के साथ भूमि पर पदार्पण किया है। उनका आत्मविश्वास शत-सहस्र शाखाओं के साथ वट-वृक्ष की तरह स्थिर तथा स्थायी हो गया।

तेरह-चौदह वर्ष की आयु में आते-आते दादाजी कोणदेव ने शिवाजी को तन, मन, बुद्धि और आत्मा से स्वस्थ, साहसी, सुज्ञ तथा तेजस्वी बना दिया। अब वे उन्हें उनके पिता की जागीर के माध्यम से राज्य-प्रबंध, संचालन, शासन तथा प्रशासन की व्यावहारिक शिक्षा के साथ-साथ राजत्व के गुणों में दक्ष बनाने लगे और जल्दी ही इतना योग्य कर दिया कि वे स्वयं अपने आप सारी राज्य-व्यवस्था चला सकें।

चौदह वर्ष की आयु में ही शिवाजी जागीर का बहुत-सा काम खुद करने लगे। वे प्रजा की दशा और उसकी आवश्यकताएँ जानने के लिए गाँवों का दौरा करते, वहाँ दरबार लगाते और लोगों की शिकायतें सुनकर झगड़े निपटाते थे। वे क्षेत्रों के प्रभावशाली व्यक्तियों से मिलते और देश-धर्म के प्रति उनका मनोभाव जानने का प्रयत्न करते। जागीर की आर्थिक तथा सामाजिक दशा का पता लगाते और उसके सुधार तथा विकास के लिए योजनाएँ बनाकर देते। इसके अतिरिक्त वे लोगों को जमा करते और उनमें संगठन, साहस तथा देश, धर्म की सेवा करने की प्रेरणा भरते। वे अपराधियों, अन्यायियों तथा आतंकवादियों को समझाते, उन्हें सुधरने का अवसर देते और आवश्यकता पड़ने पर दंड देते थे। वे प्रसंगों को सुनते और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन पर इतना निष्पक्ष निर्णय देते थे कि लोग आश्चर्यचकित रह जाते थे।

निरालस्य, स्फूर्ति, उत्साह, तत्परता तथा श्रमशीलता जैसे जीवन-विकास में सहायक गुणों को शिवाजी ने अलंकारों की तरह धारण किया हुआ था। नियम, संयम और नियमित उपासना करना उन्होंने नित्यकर्म बना लिया था। कब, क्या और किस तरह करना है ? इस बात से वे कभी अचेत न रहते थे। व्यवहारकुशलता के साथ वाक्पटुता का अभ्यास उन्होंने प्रयत्नपूर्वक किया था। पर-निर्भरता और परमुखापेक्षण की दुर्बलता को वे मानव-जीवन पर एक कलंक के समान समझते थे। साथियों, सहायकों तथा सहयोगियों के साथ उनका उपयुक्त व्यवहार लोगों को उनका अभिन्न बना देता था। शिवाजी के इन गुणों को देखकर लोगों को आशा बँधने लगी कि, शायद यह तरुण देश-जाति के लिए कुछ कर सके। शिवाजी ने लोगों की यह अपेक्षा कुछ ही नहीं बहुत कुछ करके चरितार्थ कर दिखाई।

शिवाजी ने अपने इन्हीं गुणों तथा योग्यताओं के बल पर जागीर के सारे तरुण, नवयुवक तथा किशोरों को अपना अनुयायी बना लिया था। उन्होंने स्थान-स्थान पर इनके संगठन तथा स्वयं-सेवक दल बना दिये। समय-समय पर जाकर वे उनको शस्त्रों तथा देश-प्रेम की शिक्षा देते और धर्म की रक्षा में मर-मिटने की प्रेरणा भी। जनता में धर्म तथा राष्ट्र भावना का प्रचार करते, समितियाँ तथा सभाएँ गठित कराते और सार्वजनिक संचय से जन-निधि की स्थापना कराते। उन्होंने स्थान-स्थान पर देश-धर्म की रक्षा के लिए सामग्री एकत्रित करने के लिए भंडार-भवनों की स्थापना कराई और उसके प्रबंध तथा व्यवस्था के लिए कार्यकारिणियाँ निर्मित कराईं। लोगों में शिक्षा तथा धर्म-ग्रंथों के पठन-पाठन की रुचि पैदा की और उसके पालन के लिए आवश्यक प्रबंध भी किया। जगह-जगह उन्होंने गीता, रामायण, महाभारत तथा इतिहास की गोष्ठियाँ बनवाकर उनमें उनका पाठ प्रारंभ कराया। अनेक प्रचारक तथा प्रवक्ता तैयार करके दूर-दूर तक भेजे, जो प्रसुप्त हिंदू-जाति में जागरण करते और देश-धर्म पर मर मिटने की प्रेरणा देते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिवाजी ने बहुत से चुने हुए साथियों की एक स्वयं सैनिक सेना बनवाकर युद्ध, व्यूह तथा उसके संचालन का व्यावहारिक अभ्यास कर लिया। वे लोगों को स्वयं शस्त्र तथा युद्ध की शिक्षा देते और सेना के लिए आवश्यक अनुशासन का अभ्यास कराते। इस प्रकार उन्होंने जागीर की लगभग सभी जनता में संगठन तथा सैनिक भावना का जागरण कर दिया। इन कार्यों तथा उसके पीछे सन्निहित देश, धर्म तथा जाति रक्षा के उद्देश्य ने शिवाजी को इतना लोकप्रिय बना दिया कि लोग उन्हें यों ही अपना नेता तथा नायक मानने लगे। क्षेत्र का युवक-वर्ग तो उनके लिए मर-मिटने को सदैव तैयार रहने लगा। आगामी संघर्ष की यह एक विशाल तथा उपयुक्त तैयारी थी, जिसमें दूरदर्शी शिवाजी तन, मन और धन से जुटे हुए थे। आराम, आनंद और विलास-विनोद क्या होता है ? अव्यवसायी शिवा को इसका भान तक न था। जिसके सम्मुख इतना विशाल कार्य और इतना विस्तृत कार्य-क्षेत्र पड़ा हो, वह संसार के झूठे आनंद में पड़कर अकर्तव्य किस प्रकार कर सकता है ? इस प्रकार का अनुत्तरदायित्व तो वे ही किया करते हैं, जो जिसमें जन्म लेकर भी अपने समाज तथा देश का दुरावस्था से दुःखी नहीं होते। उनकी नाड़ियों का रक्त उनके उद्धार तथा सुधार के लिए तड़प नहीं उठता। शिवाजी को अपने देश धर्म से प्रेम था, वे समाज के सच्चे हितैषी तथा शुभ-चिंतक थे। वे तृण के समान सांसारिक भोगों को पवित्र कर्तव्य पर श्रेय किस प्रकार दे सकते थे ?

शिवाजी के विकास का समाचार उनके पिता शाहजी को बीजापुर मिलता ही रहता था। उन्होंने अब पुत्र को अपने पास बुलाकर राजनीतिक क्षेत्र में परिचित करा देना उचित समझा। अतः उन्होंने शिवाजी को जीजाबाई के साथ बीजापुर बुला लिया। गुणों की विशेषताएँ प्रकट होते देर नहीं लगती। शिवाजी के रंग-रूप, स्वास्थ्य, विनम्रता, अनुशासन, व्यवहार तथा आचरण के सौंदर्य ने जल्दी ही सब पर जादू-सा कर दिया। शाहजी का जो भी दरबारी मित्र अथवा संभ्रांत एक बार शिवाजी से बात कर लेता था, उसकी सारी सद्भावनाएँ उनकी ओर हो जाती थीं। बीजापुर के अमीर-उमरा तो उनके व्यक्तित्व तथा गुणों से इतने आकर्षित हुए कि दरबार में भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनकी चर्चा करने लगे। शिवाजी के विषय में सुनकर सुलतान भी उन्हें देखने के लिए उत्सुक हो उठा।

अपने मित्र मुरार जी पंत के बहुत जोर देने पर एक दिन शाहजी ने शिवाजी को साथ में दरबार चलने को कहा और यह भी बतलाया कि दरबार में पहुँचते ही जमीन तक झुककर बादशाह को कोरनिश करें, बतलाई हुई जगह पर बैठें और बिना पूछे कोई बात न करें। पिता ने समझा कि पुत्र को दरबारी तौर-तरीकों की शिक्षा दे रहा है और पुत्र ने उसे अपनी आत्मा का अपमान समझा। उनने तुरंत उत्तर दिया—पिताजी ! बादशाह विधर्मी और अत्याचारी है। वह हिंदुओं और हिंदू-धर्म का दुश्मन है। मंदिर तुड़वाता है और हिंदुओं को जबर्दस्ती मुसलमान बनाता है। गो-वध करवाता है। मैं गो, जाति तथा धर्म का सेवक हूँ। यवन बादशाह को कोरनिश करना तो दूर है, मैं उसकी सूरत भी देखना नहीं चाहता।

शाहजी को शिवाजी की बातें सुनकर जरा भी आश्चर्य न हुआ। उन्हें पहले से ही यही उत्तर पाने की आशंका थी। शिवाजी के विचार, विश्वास, भावनाओं तथा सिद्धांतनिष्ठा से वे भली प्रकार परिचित थे। उन्होंने शिवाजी से फिर आगे कुछ न कहा। जीजाबाई को समझाने का निर्देश दिया। माता जीजाबाई ने भी शिवा को बहुत कुछ समझाया और पिता की आज्ञा-पालन करने को कहा। तथापि शिवाजी दरबार जाने को तैयार न हुए। उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि पिता की आज्ञापालन करना मेरा कर्तव्य जरूर है, पर कोई अनुचित आज्ञा मानने को मैं तनिक भी तैयार नहीं हूँ। दरबार के लिए दी गई उनकी आज्ञा मेरे सिद्धांत, स्वाभिमान तथा धर्म के विपरीत है। मैं दरबार जाकर उस म्लेक्ष शासक को कदापि कोरनिश नहीं कर सकता। जीजाबाई बेटे का यह स्वाभिमान तथा दृढ़ता देखकर मन ही मन प्रसन्न होकर पुलक उठीं। उन्हें इस बात का संतोष हुआ कि शिवा पर उनका प्रयत्न ठीक और वांछित दिशा में फलीभूत हुआ। उन्होंने दिखावे के लिए एक-आध बार शिवा से दरबार के विषय में पिता की आज्ञापालन करने को कहा और फिर मौन हो गई। उन्होंने पति से कह दिया कि, लड़का मेरे समझाये न मानेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शाहजी ने मुरार पंत से सारी बात बतलाई और कहा—"मैं कहता था न कि शिवा बड़ा स्वाभिमानी है। वह दरबार में आने और बादशाह को सलाम करने को तैयार न होगा। उसने साफ कह दिया कि, मैं उस विधर्मी बदशाह की सूरत भी नहीं देखना चाहता।" मुरार पंत ने कहा—"अभी लड़का ही तो है। हित-अनहित नहीं समझ सकता। मैं उसे समझा दूँगा।"

दूसरे दिन मुरार पंत शाहजी के घर गये और शिवाजी को बुलाकर कहा—"बेटे ! तुम्हें दरबार में चलना ही चाहिए। वहाँ जाने से बड़ा लाभ होगा। बादशाह खुश हो जायेगा तो खिताब और ओहदा देगा, जागीर बख्शेगा। अपने बड़े लाभ के लिए बादशाह को एक बार सलाम कर लेने में क्या हर्ज है ? मतलब के लिए मनुष्य क्या नहीं करता ? इस दुनिया में तो ऐसे ही काम चलता है। इस समय तो सारे भारत पर ही यवनों की सत्ता छाई हुई है। ईश्वर की ऐसी ही इच्छा है तो हम लोग कर ही क्या सकते हैं ? सभी लोग उन्हें सलाम करते और लाभ उठाते हैं, तब तुम भी यदि अपनी उन्नति तथा सुख-सुविधा के लिए सलाम कर लोगे तो क्या घट जायेगा ? गो-वध हमारे-तुम्हारे बंद कराये तो नहीं बंद हो जायेगा। जब समय आयेगा और भगवान् की इच्छा होगी तो बंद हो जायेगा। अवसर देखकर काम करना ही बुद्धिमानी है। मेरी मानो और दरबार में चलो। हम सब बादशाह से तुम्हारी सिफारिश करेंगे और तुमको ओहदा और जागीर मिल जायेगी। सुख से अपना जीवनयापन करना। इन सब नाहक के विरोधों तथा खेदों में क्या रखा है ?"

मुरार पंत की बात सुनकर किशोर शिवा बड़ी देर तक उनके मुँह देखते और सोचते रहे कि ऐसे ही स्वार्थ तथा सुख-लिप्सुओं के कारण ही देश व धर्म की यह दशा है। फिर बोले—"खेद है चाचा कि आप ऐसे विद्वान् तथा योग्य व्यक्ति होकर ऐसी ओछी बात कहते हैं। बादशाह से चाटुकारिता में पाये जिस पद और जागीर को लाभ बतलाते हैं, उसे मैं भिक्षा से अधिक गया-गुजरा समझता हूँ। अपने बाहुबल और सत्कर्मों द्वारा उत्पादित संपत्ति को मैं ग्राह्य तथा वांछनीय मानता हूँ। देश और धर्म पर होते अत्याचार पर दृष्टिपात न कर केवल अपने स्वार्थ की ओर ही देखते रहना अपमाननीय प्रवृत्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं, जो किसी भी स्वाभिमानी आदमी को शोभा नहीं देती। यह बात सही है कि मनुष्य के जीवन में स्वार्थ का भी एक स्थान है। किंतु उस स्वार्थ को निकृष्टता ही कहा जायेगा, जिसका संपादन अथवा जिसकी पूर्ति देश, धर्म अथवा समाज को जरा भी क्षति पहुँचाता है। यह यवन बादशाह हिंदुओं को इसी प्रकार ही तो लालच में डालकर अपने अत्याचार में उनका विरोध और अनुमोदन पाते हैं। रोटी के टुकड़ों की तरह जागीरें सामने डालकर श्वानवृत्ति जगाते और भाई से भाई का गला कटवाते हैं। दुनिया में हेय तथा हीन बनकर ही तो काम नहीं चलता। यह तो मनुष्य की अपनी कमजोरी और सोचने का ढंग है कि अन्यायियों के तलवे चाटने से ही काम चलता है। वैसे इतिहास, अनुभव, दृष्टांत तथा उदाहरण साक्षी है कि संसार में एक से एक बढ़कर स्वाभिमानी तथा सिद्धांत के धनी व्यक्ति हुए हैं; जिन्होंने सिर दे दिया, जीवन दे दिया, पर स्वाभिमान नहीं दिया। उन्होंने यश पाया, गौरव पाया, मान और सम्मान पाया। लक्ष्मी तो ऐसे श्रेय-पुरुष के पीछे-पीछे चलती है। देश में यवनों की सत्ता को ईश्वर की इच्छा मानना कायरता ही नहीं, नास्तिकता भी है। ईश्वर ऐसे अत्याचारी तथा धर्मद्वेषी लोगों की सत्तावान् देखने की इच्छा नहीं कर सकता। जल्दी ही वह इनको और इनके जोर-जुल्म को मिटा देगा। भारत में यवनों की सत्ता बिल्कुल असंगत है। यह और कुछ नहीं, केवल हिंदुओं की वीरता और धर्मनिष्ठा की कसौटी है, उनके स्वाभिमान के लिए एक परीक्षा, एक चुनौती है। ऐसी ही कायर भावनाओं वालों ने 'दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा'—का अश्रवणीय वाक्य जनता को देकर उसे यवन बादशाहों की गुलामी करने के लिए हतचेत बनाया है।''

"और आपका यह कहना है कि हम लोग कर ही क्या सकते हैं ? एक दुर्भाग्यपूर्ण निराशा की सूचना है। आदमी क्या नहीं कर सकता ? जिस प्रकार आप विधर्मियों के पक्ष में युद्ध करते और कष्ट उठाते हैं, क्या उसी प्रकार धर्म रक्षा के लिए संघर्ष नहीं कर सकते हैं ? जरूर कर सकते हैं। पर कमी यह है कि आप लोगों की आत्माएँ कुधान्य खाते-खाते और दरबारों की चमक-दमक में रहते, तेजहीन हो चुकी हैं। विवेक पर मोह का आवरण आ गया है। अपने को हीन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और विधर्मियों की श्रेष्ठ समझने का अभ्यास हो गया है। तैंतीस करोड़ हिंदुओं के बीच यह मुट्ठी भर यवन सिंह की तरह शासन करें। यह बड़ी लज्जाजनक बात है। पर यह असंभव संभव इसलिए दिखलाई दे रहा है कि हिंदुओं की जाति भावना और आत्म-गौरव अस्त हो गया है। पारस्परिक फूट, स्वार्थ तथा विश्रामपूर्ण जीवन की कायरता ने उन्हें तेजहीन बना दिया है।''

"यवन बादशाहों को सभी सलाम करते हैं, इसलिए मैं भी करूँ, यह बात तो कोई अर्थ नहीं रखती। निकृष्टताओं का अनुकरण करना श्रेयस्कर नहीं होता। यदि अनुकरण ही करना होगा तो संसार में श्रेष्ठताओं और व्यक्तियों की कमी नहीं है। यवनों द्वारा दी हुई अपनी ही भूमि पर एक टुकड़ा पाकर उसे अहोभाग्य मानने से बढ़कर नासमझी की कोई बात हो ही नहीं सकती—आसंतु हिमांचल यह समग्र भारत भूमि अपनी है। इस पर यवनों का अधिकार एक बलात्कार है, जो किसी प्रकार भी सह्य नहीं होना चाहिए। जिसका धर्म, जिसका इतिहास, जिसका स्वाभिमान और जिसका समाज संकट की स्थिति से गुजर रहा है, यदि उसको अन्यायियों की दी जमीन पाकर सुख-सुविधापूर्ण जीवनयापन की लालसा सताती और प्रेरित करती है तो निश्चय ही उसकी नाड़ियों से गंगा और यमुना का पानी सूख गया है। आर्यत्व उसे मृत मानकर छोड़ गया है। यह अवसर यवन बादशाहों के दरबारों में बैठकर चाटुकारी करने का नहीं है। यह समय है कि एक हाथ में प्राण और एक हाथ में कृपाण लेकर देश-धर्म की रक्षा के लिए जूझने का चाचा। मैं तो उस दरबार में जाकर चाटुकारी न कर सकूँगा, मैं देश की धूल छानूँगा और धर्म रक्षा में अपने प्राण दे देने के लिए कटिबद्ध होकर दूसरों को भी बलिदान के लिए तैयार करूँगा। यही मेरा सुख है, यही मेरा कर्तव्य और यही मेरा जीवन लक्ष्य है। आशा है आप मुझे इस स्पष्टवादिता के लिए क्षमा करेंगे।'' मुरार पंत शिवाजी की बातें सुनकर पहले तो कुछ अप्रसन्न हुए, फिर सोचने-समझने पर वे उनके विचारों की प्रशंसा करने लगे और फिर समझाया कि, वीर-नीति के अंतर्गत ही सही दरबार में चलो जरूर। ऐसा करने से वहाँ हिंदुओं की आवाज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में बल आयेगा। शिवाजी को मुरार पंत का दृष्टिकोण बदलते देखकर प्रसन्नता हुई और उन्होंने विचार करने का वचन दे दिया।

पर शिवाजी की आत्मा दरबार में जाना स्वीकार न कर सकी और वे बराबर बात टालते रहे। एक दिन शाहजी बहुत चिंतित तथा उदास घर आये। कारण पूछने पर उन्होंने जीजाबाई को बतलाया—"दरबार में नित्य-प्रति शिवा की चर्चा चलते रहने से बादशाह उनको देखने के लिए बहुत उत्सुक हो उठा है। आज उसने आदेश की भाषा में शिवा को लाने के लिए कहा है और यह भी कहा है कि, यदि कल मैं उसे लेकर दरबार में न आऊँ तो यही समझा जायेगा कि मैं उसे दरबार में जानबूझ कर नहीं ले जाना चाहता। तुम्हारा हठीला बेटा तैयार नही और बादशाह जिद कर रहा है। वह इस बात में किसी दुरभिसंधि की कल्पना करने लगा है। इस सबका परिणाम यह होगा कि जल्दी ही बात बिगड़ जायेगी और मैं बैठे-बैठाये किसी संकट में पड़ जाऊँगा। समझ में नही आता, क्या किया जाये ? एक बार भी यदि वह दरबार हो आता तब भी बात ज्यादा नहीं बिगड़ती।"

जीजाबाई ने शिवाजी को पिता की पीड़ा तथा स्थिति बतलाई और एक बार दरबार में हो आने का पुनः अनुरोध किया। शिवाजी ने सोचा कि अब ऐसी दशा में मेरा सिद्धांत दुराग्रह बन जायेगा और उससे पिता पर संकट आ जायेगा। यहाँ पर अवसरानुकूल मुझे कुछ नम्र हो ही जाना चाहिए। आगे बहुत काम करना है और उसके लिए तैयारी भी। अभी से अपने को आपत्ति में डालकर गतिरोध उत्पन्न कर लेना दूरदर्शिता नहीं होगी। उन्होंने निश्चय कर लिया कि कल पिता के साथ दरबार जायेंगे और देश काल के अनुसार जो उचित होगा वही करेंगे।

शाहजी शिवाजी को रास्ते भर दरबारी रीति-रिवाज समझाते और व्यवहार की रूपरेखा बतलाते गये। फिर भी जब वे दरबार में पहुँचे तो सर्वोच्च आसन पर यवन बादशाह को बैठा देखकर उनका खून खौल उठा, आत्मा विद्रोह कर उठी। उनका विक्रांत हाथ तलवार की मूठ पर गया, पर पिता की स्थिति सोचकर सहसा रुक गया। उनकी दृष्टि-भंगिमा बदल गई और वे बिना कोरनिश दिये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पिता के पास जाकर बैठ गये। बड़ा भयानक साहस था। दरबार सिहर उठा। पर शिवाजी को अपने ऊँचे स्वाभिमान के कारण उसमें कुछ भी अन्यथा अनुभव न हुआ। वे निडर दृष्टि से बादशाह की ओर देखने लगे। बादशाह की नजर घूमी और उसने मुरार पंत पर प्रश्नात्मक दृष्टि डाली। मुरार पंत अदब के साथ खड़े हुए और दरबारी भाषा में बोले—"हुजूर ! यह शाहजी का वही लड़का शिवा है। आज पहले-पहले दरबार में आया है। दरबारी तौर-तरीकों से नावाकिफ है। मुजरा न करने की गुस्ताखी कर बैठा है, आलम पनाह ! बच्चे को इस पहली नाजानकारी को मुआफ फरमाये। आइंदा ऐसी गलती नहीं करेगा।" शिवाजी की इच्छा हुई कि वे अभी उठें और शेर की तरह दहाड़कर पूरे दरबार और इस म्लेच्छ बादशाह को बतला दें कि मुरार जी का वक्तव्य गलत है। उन्होंने कोरनिश करनी ही नहीं चाही और न वे आगे ही करेंगे, क्योंकि वह अनुचित है और उनके स्वाभिमान के विरुद्ध है। किंतु वीर होने के साथ-साथ वे धीर भी थे और देशकाल के अनुसार अपने आवेगों को नियंत्रित करना भी अच्छी तरह जानते थे। उनमें भावनाओं को वश में रखने की शक्ति थी। यही तो वह धीरता है, जो ऊँची मनोभूमि और समतल धरातल वाले वीर पुरुषों की एक शोभा है। यही धीरता और विचार संतुलन की शक्ति सम्मान को आततायी अथवा शक्ति-मत्त हो उठने से रोकती है, जिससे उनके उठाये हुए कदम ऊँचे-नीचे न पड़कर ठीक स्थान पर और ठीक दिशा में पड़ते हैं। बादशाह ने मुस्कराकर सिर हिला दिया। बात टल गई। बादशाह ने एक कीमती खिलत और बहुत-से बेशकीमती जवाहिरात शिवाजी को देकर अपने प्रसन्नता तथा प्रेम प्रकट किया। शिवाजी अब प्रायः नित्य ही दरबार में जाने लगे।

पर वे कोरनिश कभी नहीं करते। साधारण-सा नमस्कार करके अपने स्थान पर जाकर बैठ जाते थे। कई दिन देखते रहने के बाद आखिर एक दिन बादशाह पूछ ही बैठा—"शिवा, क्या तुमको दरबारी तौर-तरीके बतलाये नहीं गये ?" प्रत्युत्पन्न बुद्धि शिवाजी ने स्थिति समझ ली और बड़े सामान्य भाव से बोले—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"पिताजी ने मुझे दरबार के सारे रीति-रिवाज भली प्रकार बतला दिये हैं। पर मैं आपको बादशाह से अधिक अपना गुरुजन समझता हूँ। पिता के समान मानता हूँ। आपको कोरनिश करने में मुझे बनावट जैसी बात मालूम होती है। मैं आप में और अपने पिता में कुछ अंतर समझूँ तो मुजरा अदा करूँ। मेरा निवेदन है कि आप मुझे मुजरे के बनावटी शिष्टाचार न करने की छूट देकर क्षमा करें। शिवाजी का उपयुक्त उत्तर सुनकर बादशाह और भी खुश हो उठा। उन्हें दरबार में कोरनिश न करने की छूट मिल गई। शिवाजी ने चतुर बुद्धि का उपयोग कर साँप मारकर भी अपनी लाठी बचाली। यही तो बुद्धि का खेल है, राजनीति की वह चाल है, जो छली, कपटी और दुष्ट दुरात्माओं से बचाती और पार लगाती है।

पर यह स्थिति अधिक दिनों तक न रह सकी। सच्ची भावनाओं वाला तेजस्वी पुरुष चातुर्य अथवा कौटिल्य को अधिक प्रश्रय नहीं दे पाता है। दुरंगे दुपट्टे की नीति से उसे ग्लानि होने लगती है और जल्दी ही वह अपना वास्तविक रूप उद्घाटित कर देता है। जिससे शत्रु अथवा मित्र कोई धोखे में न रहे और उसके उज्ज्वल कर्तव्य पर प्रवंचना का कलंक न लगने पावे। विडंबनापूर्ण जीवन की तुलना में सच्चे सत्पुरुष मृत्यु को अधिक अंक दिया करते हैं।

शिवाजी जिस रास्ते पिता के साथ राजदरबार जाया करते थे, उस पर कसाइयों की बहुत सी दुकानें पड़ती थीं। उनमें गो-मांस भी बिका करता था। कभी-कभी किसी गऊ का कटा हुआ सिर भी टँगा हुआ दिखाई देता था। एक दिन एक कसाई को उन्होंने गो-वध करते हुए पीट दिया और दूसरे दिन से दरबार में जाना छोड़ दिया।

शाहजी फिर धर्म संकट में पड़ गये। उन्होंने इस बार शिवाजी की बहुत कटु आलोचना की और कहा कि इस तरह सरेआम किसी आदमी को पीटना एक सरदार के लड़के को शोभा नहीं देता। तुम्हारी यह उद्धतता निश्चय ही हमारी इज्जत ले लेगा और हम भीख माँगने के योग्य हो जायेंगे।

शिवाजी को पिता की बात सुनकर बड़ा दुःख हुआ और अनुमति लेकर पूना चले गये। पूना आकर उन्होंने स्वतंत्र रूप से अपना संगठन बनाना तथा प्रचार करना आरंभ कर दिया। सबसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहले उन्होंने पूना के आस-पास जंगल तथा पहाड़ों में रहने वाली मवाली जाति के लोगों का संगठन किया। मवाली लोग बड़े वीर और विनम्र आदिवासी थे। उनमें किसी सदुद्देश्य के लिए मर मिटने की भावना थी। पर उनको अशिक्षा तथा शराब पीने का व्यसन निकम्मा और निर्धन बनाये हुए था। उनकी दशा बड़ी खराब थी। शिवाजी ने उनमें शिक्षा का प्रचार किया और धन से उनकी सहायता भी की। उनके अंधविश्वास तथा निरुत्साह को दूर किया। कुछ दिनों के प्रयत्न के बाद मवाली लोगों में चेतना आ गई। उन्होंने अपना सुधार किया और मानवजीवन का मूल्य समझा। जल्दी ही वे सब शिवाजी के अनुयायी बन गये और शिवाजी ने उन्हें एक प्रशिक्षित सेना के रूप में बदल दिया।

इधर दादा जी कोणदेव की मृत्यु हो जाने से पूना और सूया की जागीर के सारे अधिकार तथा उसका प्रबंध शिवाजी के हाथ में आ गया। जिससे उनकी शक्ति, प्रभाव तथा साधन और भी बढ़ गये। किंतु उन्होंने अपना सर्वस्व देश, धर्म की रक्षा में ही अर्पण कर दिया।

सेना का संगठन और जागीर पर अधिकार हो जाने के बाद शिवाजी ने स्वतंत्र हिंदू-राज्य की नींव डालने का श्रीगणेश कर देने का विचार बनाया और उसके लिए अपने मित्रों तथा सहयोगियों की एक सभा बुलाकर विचार विमर्श किया। शिवाजी के बाल-सखा तीन मवाली नौजवान, एसाजी कंक, तानाजी मालसुरे और बाजी पालसकर, जो अपने मवाली जाति के मुखिया-वर्ग में से थे, ने परामर्श दिया कि अभी राज्य-स्थापना का काम प्रारंभ न किया जाए। इसको कुछ समय के लिए स्थगित रखकर पहले सह्याद्रि पर्वत और जंगलों के रास्तों, गुफाओं, युद्ध के लिए उपयुक्त स्थानों और बचाव स्थलों की खोज और जाँच-पड़ताल कर ली जाए। शिवाजी को अपने इन सहयोगियों का परामर्श बहुत पसंद आया और उन्होंने उतावली का त्यागकर सबसे पहले वही काम किया। मार्गों तथा मानचित्रों का ज्ञान न होना किसी भी सेना-संचालक के लिए एक हानिकर अयोग्यता मानी गई है। शिवाजी ने कई महीनों अपने विश्वस्त तथा अंतरंग सहयोगियों के साथ सह्याद्रि तथा आस-पास के जंगलों को मथ डाला और चप्पा-चप्पा भूमि से परिचय प्राप्त कर लिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस प्रकार सभी ओर से सन्नद्ध होकर उन्होंने मवाली क्षेत्र के रोहिद दुर्ग से अपने उद्देश्य का प्रारंभ किया। इस किले में रोहितेश्वर नाम का एक मंदिर था। किला और मंदिर दोनों बीजापुर के नवाब के अधिकार में थे। किलेदार और मंदिर का पुजारी नवाब बीजापुर का आदमी था। शिवाजी ने उसे पृथक् कर उसके स्थान पर अपना आदमी नियुक्त कर दिया।

समाचार बीजापुर पहुँचना ही था, पहुँचा भी। पर जब तक उस पर कोई कार्यवाही या जवाब तलबी हो, शिवाजी ने अपने मवाली सेना तोरण के किले की ओर बढ़ा दी। आक्रमण करने से पूर्व शिवाजी ने एसाजी, तानाजी और बाजीजी को किलेदार के पास भेजकर कहलाया कि, वह शांतिपूर्वक किला हवाले कर देगा या उन्हें सैनिक कार्यवाही करनी होगी। शिवाजी की शक्ति और उनकी दृढ़ता देखकर किलेदार डर गया। तोरण पर शिवाजी का अधिकार हो गया। इसकी सूचना भी नवाब बीजापुर के पास पहुँची। उसका माथा ठनका और शिवाजी के पिता को प्रेरित कर उन घटनाओं का जवाब मँगवाया। शिवाजी ने नीति से काम लिया। सीधे संघर्ष छेड़ देने के स्थान पर कहला भेजा कि उन दोनों किलों का प्रबंध ठीक नहीं चल रहा था, इसलिए उनको अपने संरक्षण में ले लिया। इससे बीजापुर राज्य की ताकत बढ़ेगी और आय भी। जवाब पाकर नवाब खामोश हो गया।

तोरण का किला पुराना और जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। शिवाजी ने उसका सुधार करने के लिए खुदवाना प्रारंभ किया। संयोगवश उसमें उन्हें किसी पुराने नवाब का खजाना गड़ा मिल गया। उस धनराशि को उन्होंने देवी की देन समझा और उससे सेना, अस्त्र-शस्त्र, गोला-बारूद, रसद आदि का प्रबंध किया और उसी से पाँच-छह मील दूर एक आवश्यक स्थान पर राजगढ़ नाम का नया किला बनावाकर उसे साज-सज्जा से समर्थ बना दिया। शिवाजी की इस उन्नति से जनता का ध्यान उनकी ओर अधिक हो गया और हजारों नौजवान कम से कम वेतन पर उनकी सेना में उत्साहपूर्वक भरती हो गये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिवाजी के विमातुल संभाजी मोहिते को शिवाजी की इस विकसित होती शक्ति से ईर्ष्या होने लगी और उसने उनके उत्थान को वहीं पर दबा देने की सोची। देश में जहाँ एक ओर शिवाजी जैसे लोग धर्म की रक्षा में अपने प्राणों की बाजी लगाये हुए थे, वहाँ संभाजी मोहिते जैसे देशद्रोही उस पुण्य प्रयास में बाधा बनने में अपना भला देख रहे थे। मोहिते ने बीजापुर शिकायत लिख भेजी। शिवाजी ने उस हानिकर तत्त्व को धर्म-मार्ग से हटा देना उचित समझा और उसके अध्यक्षता एवं उपाध्यक्षता के चाकन और सूया नामक दो दुर्गों पर आक्रमण कर दिया और साथियों के साथ उसे कैदी बना लिया। शिवाजी के इस काम ने उनका प्रभाव इतना बढ़ा दिया कि आस-पास और दूर-दूर तक के किलेदार उनसे भयभीत होकर उन्हें अपना नायक मानने लगे। इस प्रतियोगिता के आधार पर जल्दी ही उनका अधिकार चाकण, इंदरपुर, वारामती, कोडावत और पुरंदर आदि किलों पर हो गया।

शिवाजी के इस विकास और विस्तार का समाचार जल्दी-जल्दी बीजापुर के नवाब के पास पहुँचने लगा, जिससे वह बहुत ही चिंतित हो उठा। उसने शाहजी पर जोर डाला कि, वे शिवाजी को लिखें, उन्हें इस काम से रोकें और हथियाये हुए सारे किले राज्य को वापस दिलाएँ। शाहजी ने शिवाजी की भर्त्सना करते हुए उन्हें वैसा करने को लिखा। किंतु शिवाजी तो अब अपने स्वतंत्र अभ्युदय की ओर पग उठा चुके थे। उन्होंने पिता की लिख दिया कि—बीजापुर दरबार से मेरा कोई संबंध नहीं है और न मैं अपने को उसका मातहत ही मानता हूँ। मैं परमात्मा की आज्ञा से देश में स्वतंत्र हिंदू-राज्य की स्थापना का कर्तव्य कर रहा हूँ। अपने इस पुण्य-कर्तव्य में अब मैं किसी का हस्तक्षेप स्वीकार करने को तैय्यार नहीं हूँ। पर शिवाजी का पत्र बीजापुर राज्य के विरुद्ध स्पष्ट विद्रोह और शक्ति को एक चुनौती थी।

शिवाजी का उत्तर जब तक पहुँचा और नवाब बीजापुर कोई कार्यवाही करने को तैयार हुआ तब तक शिवाजी ने अपने एक सहयोगी आनाजी सोनदेव को कल्याण के किले पर अधिकार कर लेने का निर्देश दे दिया। आनाजी सोनदेव ने न केवल कल्याण के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किले पर ही अधिकार कर लिया, बल्कि कल्याण के किलेदार अहमद को उसकी पुत्र-वधू के साथ गिरफ्तार कर लिया।

शिवाजी के सम्मुख मौलाना अहमद और उसकी पुत्र-वधू बंदी के रूप में उपस्थित किये गये। अहमद की पुत्र-वधू एक अपूर्व सुंदरी थी। उसका रूप देखकर सारा दरबार चकित रह गया। शिवाजी भी उसे एकटक होकर देखने लगे। अहमद और उसकी पुत्र-वधू दोनों के चेहरे पर उभरे भाव से यह आभास होता था कि जैसे वे समझ रहें हों कि शिवाजी नारी के रूप में आसक्त हो उठे हैं। ऐसा ही कुछ विचार दरबारियों की भाव-भंगिमा से प्रकट होता था। आना सोनदेव ने स्वयं यह चाहा कि शिवाजी शत्रु की स्त्री को अपनी सेविका बनालें, जिससे कि यवनों द्वारा हिंदू महिलाओं पर किये जाने वाले अत्याचार का प्रतिकार हो सके।

पर शिवाजी कितने बुद्धिमान् और विवेकशील व्यक्ति थे इसका अनुमान वहाँ उपस्थित व्यक्तियों में से कोई न कर सका। सभी ने उन्हें उस तराजू पर तोलने का प्रयत्न किया, जिस पर लोलुप और कापुरुष तोले जाते हैं। शिवाजी के हृदय में अपने विचारों के अनुरूप ही संयम तथा चरित्र का प्रकाश मौजूद था, जिसके आलोक में वे बड़े पवित्र भाव से उस नारी का दर्शन कर रहे थे।

बड़ी देर तक देखते रहने के बाद वे बोले—"कैसा अनुपम तथा प्रशंसनीय रूप है, यदि मेरी माता भी इसी तरह सुंदर होती तो मैं भी आज कितना सुंदर होता ?"

शिवाजी की बात सुनकर सभा के लोगों को अपने कुत्सित विचार पर बड़ी ग्लानि हुई और उनके मुख से सहसा ही 'धन्य-धन्य' के शब्द निकले पड़े। मौलाना अहमद तो श्रद्धा-विभोर होकर रो पड़ा और उसकी पुत्र-वधू कह उठी—"जो आदमी इतना नेक, ईमानदार और पाकचलन है, जो दुश्मन की औरत के साथ इतना इज्जत भरा सलूक कर सकता है, वह एक दिन जरूर बड़ा आदमी होगा और दुनिया उसके नाम को सिजदा किया करेगी।"

कोकण प्रदेश का राजापुर नामक एक नगर बहुत समय से हब्शियों के अधीन चला आ रहा था। वहाँ की जनता उनके आततायी शासन में बहुत पीड़ित थी। यह विदेशी हब्शी उनकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सभ्यता और हीन संस्कृति पर आघात करते हुए उसे मिटाकर अनार्यता का समावेश करने की कोशिश कर रहे थे। वहाँ के समाज चिंतक और जन-हितैषी लोग यथासाध्य उसका विरोध करते हुए तलवार के घाट उतर रहे थे। परिस्थितियाँ प्रतिकूल होने के कारण जन-आंदोलन सफल नहीं हो पाते थे। इधर शिवाजी के अभ्युदय की सूचना सारे देश में फैलती जा रही थी। वह समाचार राजापुर भी पहुँचा। जनता को मानों डूबते हुए थाह मिल गई। उनके हृदय आशा से आलोकित हो गये। उन्होंने शिवाजी को अपनी यातनाओं का समाचार भेजा और उद्धार की प्रार्थना की। शिवाजी ने तुरंत तैयारी करके राजापुर पर आक्रमण करके उसे अपने संरक्षण में लिया। शिवाजी की इस विजय से सारे देश में हर्ष की लहर दौड़ गई और सारा देश ही उनकी ओर आशा भरी दृष्टि से देखने लगा।

कल्याण के किलेदार मौलाना अहमद और उसकी पुत्र-वधू को जब शिवाजी ने आदरपूर्वक मुक्त कर बीजापुर भेज दिया तो वह अपना स्पष्टीकरण देने वहाँ के नवाब आदिलशाह के दरबार में गया और सारी घटना कह सुनाई। दरबार में उपस्थित सारे लोगों ने शिवाजी के चरित्र की प्रशंसा की। किंतु आदिलशाह उस प्रशंसा में शामिल न हो सका। उसे अपने उन किलों की चिंता थी, जिन्हें शिवाजी ने अपने अधिकार में ले लिया था। उसके स्वार्थी हृदय ने शिवाजी के पिता शाहजी को पुत्र की कार्यवाहियों में सम्मिलित समझा। नवाब ने उन पर दवाब डाला कि वे अपना दोष स्वीकार करें और जैसे भी हो शिवाजी की कार्यवाहियों को रोकें।

शाहजी ने बहुत कुछ अपनी निर्दोषता का प्रमाण दिया और कहा कि लड़का मेरे हाथ से बाहर हो गया है। उस पर मेरे कहने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। पर नवाब के सहज अविश्वासी हृदय ने उनके कथन पर विश्वास नहीं किया। उसने खुद एक पत्र शिवाजी को लिखा और शाहजी से भी लिखवाया, जिसका सारांश इस प्रकार था—तुम्हारी यह हरकतें बहुत आपत्तिजनक हैं, जिसका पिता बीजापुर दरबार का मनसबदार हो, उसे ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये, जिससे दुश्मनी बढ़े। भलाई इसी में है कि सारे किले नवाब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को लौटा दिये जायें और शिवाजी पहले की तरह ही बीजापुर के दरबारी बन जायें।

पर शिवाजी पर इन पत्रों को कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने तो देश, धर्म और समाज की रक्षा के लिए स्वतंत्र हिंदू राज्य की स्थापना का संकल्प ही लिया था। किसी भय अथवा लोभ से विचलित हो सकना उनके लिए संभव न था। स्वार्थ अथवा भय से परे होकर ही तो देश धर्म की रक्षा की जा सकती है। शिवाजी ने स्पष्ट लिख दिया—

"मेरे पिता बीजापुर दरबार के मनसबदार हैं, मैं नहीं। स्वतंत्र अस्तित्व की स्थिति में यह आवश्यक नहीं कि पुत्र पिता की स्थिति के अनुसार कार्य करे। पिता जिसका मातहत हो, पुत्र अपने को उसके अधीन समझे और उसकी आज्ञाओं का वैसे ही पालन करे जैसा कि उसका पिता। मैं बीजापुर दरबार में आ सकता हूँ। पर शर्त यह है कि मेरे जीते हुए किलों पर मेरा अधिकर स्वीकार किया जाये।"

शिवाजी का स्पष्ट तथा निर्भीक उत्तर पाकर नवाब आदिलशाह आपे से बाहर हो गया और चिल्ला पड़ा कि, शिवा बागी है। किलों पर उसका अधिकार नहीं माना जा सकता है। उसने उन पर नाजायाज कब्जा किया है। मैं उसकी बढ़ती हुई ताकत को कुचल डालूँगा और हमेशा-हमेशा के लिए नेस्तनाबूद कर दूँगा।

कहने को तो नवाब यह कह गया, पर सच्ची बात यह थी कि वह शिवाजी की ताकत, उसकी सच्ची धर्मनिष्ठा और साहसिक वीरता से मन ही मन डर रहा था। वह अच्छी तरह जानता था कि शक्ति के आधार पर शिवाजी को किसी प्रकार वश में नहीं लाया जा सकता। उसने कूटनीति और छल प्रपंच से काम लेने का निश्चय किया। स्वार्थी, अनीतिवान् तथा कायर व्यक्ति के पास छल, कपट के सिवा और संबल ही क्या हो सकता था ? उसने धोखे से शाहजी को कैद करा लिया।

शाहजी को धोखे से गिरफ्तार करने वाले जातिद्रोही का नाम था—बाजीघोर पांडे। वह बड़ा स्वार्थी तथा निकृष्ट व्यक्ति था। ऐसे व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए शत्रुओं के प्रति तो बड़े सच्चे तथा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वफादार रहते हैं, लेकिन अपने देश व समाज के लिए नहीं रह पाते। जिस सच्चाई और भक्ति का प्रमाण वे विपक्षियों का हित साधन में देते हैं, उसका प्रमाण यदि वे देश, धर्म तथा समाज के हित में दें, तो उनका अधिक सम्मान और अधिक लाभ हो सकता है। उनका नाम इतिहास के उज्ज्वल पृष्ठों में लिखा जाये। पर जिनका जीवन गर्हित और संस्कार विकृत रहे होते हैं, उनकी मनोगति इसी प्रकार विपरीत दिशा में रहती है। उन्हें शत्रुओं की चाटुकारिता करने और अपनों को हानि पहुँचाने में ही सुख-संतोष अनुभव होता है। ऐसे ही दुर्भाग्य वाले व्यक्ति, देश तथा धर्मद्रोही अपमानित होकर इतिहास के कलंकित पृष्ठों में लिखे जाते हैं।

बाजीघोर पांडे ने शाहजी को छल से एक प्रीतिभोज में निमंत्रित कर अपने घर में बंदी बना लिया। चालाक आदिलशाह ने इस विश्वासघात का कलंक अपने किसी जाति भाई पर न आने देकर एक हिंदू पर ही लगवाया। शाहजी को उसने एक छोटी-सी कोठरी में बंद कर दिया और उसका द्वार ईंटों से चिनवाकर थोड़ी-सी साँस रहने दी। फिर उसने शाहजी को विवश किया कि यदि तुमने चिट्ठी लिखकर शिवा के उसकी हरकतों से रोककर यहाँ न बुलाया या वह तुम्हारे बुलावे से न आया, तो दरवाजे का यह बाकी हिस्सा भी बंद कराकर तुम्हें इसी में जिंदा दफ्न कर दिया जायेगा। इसलिए खैरियत इसी में है कि तुम शिवा को यहाँ आने के लिये लिखकर मजबूर करो।

मजबूर शाहजी के पास और चारा ही क्या हो सकता था ? उन्होंने शिवाजी को सारी स्थिति लिख भेजी। शिवाजी बड़े भयानक विचार संकट में पड़ गये। यदि वे पिता की रक्षा के लिए बीजापुर दरबार को आत्म-समर्पण करते हैं तो न केवल उनके यश को ही कलंक लगेगा, बल्कि देश-धर्म की रक्षा के बोये अंकुर नष्ट हो जायेंगे और यदि वे अपने सिद्धांत की रक्षा करते हैं तो निश्चय ही पिता से हाथ धोना पड़ेगा। वे दिन-रात चिंतित तथा विमन रहने लगे।

गहनतम मानसिक द्वंद्वों तथा संकल्प-विकल्पों के बाद सार्वजनिक कल्याण-भावना पर एक बार पिता के प्रति पुत्र का मोह विजयी हो गया और उन्होंने बीजापुर जाकर आदिलशाह से संधि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने का विचार बनाया। इस विचार का प्रतिपादन हिंदुत्व के भविष्य का घातक था। यदा-कदा मनुष्य का मोह और मानसिक दुर्बलताएँ प्रवंचना के जाल में फँसाकर उसको गलत दिशा की ओर प्रेरित कर देती हैं। इस मनोसंकट के समय मनुष्य को सावधानीपूर्वक विवेक का ही अवलंब लेकर और अपने को तटस्थ बनाकर दाशयता तथा परिणाम की महत्ता के प्रकाश में किसी निर्णय का निर्धारण करना चाहिए। किंचित् कमजोरी से शिवाजी का व्यक्तिगत मोह 'सर्वजन-हिताय' की महानता पर आच्छादित हो गया ! तथापि जो अपने में सच्चा होता है और जिसका संग उत्तम होता है, उसके डगमगाते कदम को रोकने वाले संयोग आ ही जाते हैं।

शिवाजी की धर्मपत्नी साईबाई को उनके विचार का पता लगा। उन्होंने अवसर पाकर शिवाजी को उस दुविधा के अंधकार में प्रकाश दिया। उन्होंने कहा—आपने यह विश्वास किस आधार पर कर लिया कि आपके बीजापुर जाने पर यवन आदिलशाह आपको भी बंदी नहीं कर लेगा ? मेरी आत्मा कहती है कि बीजापुर जाने में कल्याण नहीं है। आदिलशाह पिताजी को तो नहीं छोड़ेगा, साथ ही आप पर भी संकट लाकर हिंदू-जाति का भविष्य नष्ट कर देगा। मेरा विनम्र परामर्श है कि आप इस समय दूरदर्शितापूर्ण राजनीति से काम लें। आप दिल्ली के मुगल बादशाह शाहजहाँ का पक्ष ग्रहण करें। उसे लिखें कि यदि वह इस समय पिताजी की रक्षा करने में आपकी सहायता करें तो उसके बदले में आप उसे दक्षिण के मुस्लिम राज्यों का दमन करने में सहयोग देंगे। दिल्ली का बादशाह अपने साम्राज्य विस्तार में दक्षिण के मुस्लिम राज्यों को सबसे बड़ा बाधक समझता है। वे बाधक हैं भी। मेरा विश्वास है कि साम्राज्य-लिप्सु तथा स्वार्थी मुगल बादशाह आपको अपने पक्ष में लेने के लिए अवश्य ही आदिलशाह को पिताजी को मुक्त कर देने के लिए विवश करेगा।

शिवाजी को जैसे आधार मिल गया। उनका मानी हृदय पत्नी को धन्यवाद दे उठा। उन्होंने शाहजहाँ को लिखा ! साईबाई का अनुमान ठीक निकला। शाहजहाँ ने शिवाजी तथा शाहजी का पक्ष पाने के लिए बीजापुर के आदिलशाह को फरमान भेजकर शाहजी को मुक्त करा दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिवाजी के सफल राजनीति से पराजित होकर बीजापुर का नवाब आदिलशाह और जल गया और अब उसने उनको छल से मरवा डालने की ठानी। उसने फिर किसी विश्वासघाती की तलाश की और बाजीघोर पांडे की तरह एक-एक बाजीश्याम राज नाम का जाति द्रोही मिल गया। आदिलशाह ने उसे धन और पद का लोभ दिया और वह वहीं क्षेत्र में जाकर घात में लग गया, जहाँ शिवाजी उस समय रह रहे थे। बाजीघोर पांडे के विश्वासघात और पिता के असावधान विश्वास से शिवाजी शिक्षा ले चुके थे। अस्तु उन्होंनें किसी शत्रु पक्षीय अथवा अनबुझ व्यक्ति पर सहसा विश्वास कर लेना राजनीति में एक कमजोरी मान लिया था। उन्होंने गुप्तचरों द्वारा बाजीश्याम राज के रंग-ढंगों का पता लगा लिया। जाति द्रोही विजातियों से अधिक भयंकर तथा दंडनीय होता है। शिवाजी ने तुरंत ही उस दुष्ट श्यामराज पर धावा कर दिया। वह कायर शिवा से मार खाकर जवाली के राजा चंद्रराव की सहायता से बच निकला और जंगलों की ओर भाग गया।

राजा चंद्रराव को चाहिए था कि वह उस धर्मद्रोही श्यामराज को बंदी बनाकर शिवाजी के सुपर्द कर देता। किंतु वह स्वयं ही शिवाजी के अभ्युदय से मन ही मन जल रहा था। उसकी यह जलन श्यामराज की सहायता के रूप में प्रकट हो गई और वीर शिवा ने उसे भी धर दबाया। इसके पहले कि ऐसे स्वार्थी तथा अदूरदर्शी राजा को सत्ताविहीन कर दिया जाये। शिवाजी ने प्रयत्न किया कि वह भारत की यवन सत्ता से मुक्त कराने में उनके झंडे के नीचे आ जाये, पर जिसका विवेक स्वार्थ के विष से नष्ट हे चुका हो, ईर्ष्या की आग में जल रहा हो, वह इस प्रकार की महानताओं को क्या समझ सकता था ? वह तैयार न हुआ। धर्म युद्ध में संकट उठाने की अपेक्षा उसने निर्लज्ज भोग-विलास का कीड़ा बना रहना ही ज्यादा पसंद किया। शिवा ने जवाली पर आक्रमण कर उसे राज्यच्युत कर कह दिया कि जिस देश के उद्धार में जो कायर राजा हाथ नहीं बँटा सकता, उसे कोई अधिकार नहीं कि वह उसके किसी भूखंड पर शासन करे। उन्होंने जवाली के किले तथा महाबलेश्वर के मंदिर का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीर्णोद्धार कराया और दो मील की दूरी पर प्रतापगढ़ नाम का एक नया किला और अपनी इष्ट देवी भवानी का मंदिर स्थापित किया।

इस प्रकार अपना बल तथा संगठन बढ़ाकर शिवाजी समय-समय पर परिस्थिति के अनुसार दक्षिण के मुसलमानी राज्य और दिल्ली के मुगल साम्राज्य के भाग भी जीतने और अपने हिंदू साम्राज्य में मिलाने लगे। उन्होंने जल्दी ही अहमद नगर, जुन्नार तथा पेड़ गाँव से मुगल सत्ता का अंत कर दिया और इस प्रकार चार सौ मील लंबे-चौड़े स्वतंत्र हिंदू राज्य की स्थापना की।

इसी समय शाहजहाँ की मृत्यु हो जाने से औरंगजेब जो उस समय कर्नाटक को जीतने, बीजापुर को बरबाद करने के विचार से दक्षिण आया हुआ था। आदिलशाह से संधि करके तख्त के लिए अपने भाइयों से लड़ने दिल्ली वापस चला गया। औरंगजेब के वापस चले जाने के बाद शिवाजी ने कोंकण तथा जंजीरा के इलाके मुसलमान सूबेदार से छीनकर अपने अधिकार में कर लिए।

आदिलशाह जो अब तक शाहजहाँ और शिवाजी की संधि के कारण चुप बैठा था, औरंगजेब से संधि हो जाने से, शिवाजी के विरुद्ध पुनः सक्रिय हो गया। उसकी आँख में शिवाजी तथा उनका अभ्युदय काँटे की तरह खटक रहा था। किसी भी मूल्य पर उनको बंदी बनवाना या मरवा डालना चाहता था। इसलिए उसने भरे दरबार में शिवाजी को पकड़ने या मार डालने के लिए एक बहुत बड़े पुरस्कार तथा पदवी की घोषणा कर दी। हिंदू या मुसलमान कोई भी सरदार अब शिवाजी के विरुद्ध जाने का साहस नहीं कर रहा था। पर कई दिन बाद मौत का मारा एक अफजलखाँ नामक सरदार उन पुरुष सिंह शिवराज को पकड़ने या मारने के लिए तैयार हो गया। ठीक ही कहा गया है कि लोभ मनुष्य के विनाश का कारण होता है। बेचारा अफजल बैठे-बैठाये उसके जाल में फँस गया और मारा गया।

अपनी यात्रा पर चलते समय वीर शिवा के तेज की कल्पना करके उसका हृदय दहल गया और उसे मरने की शंका होने लगी। उसने सोचा, यदि मैं मारा गया तो मेरे पीछे मेरी बेगमों का क्या होगा ? "विनाश काले विपरीत बुद्धि"—अफजल ने अपने एक-सौ तिरसठ बेगमों को चलते समय अपनी तलवार से कत्ल कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

डाला—ऐसा व्यभिचारी तथा इतनी निरीह नारियों का वध करने वाला एक पापी कामुक पुरुष धर्मनिष्ठ सूरमा को मारने या बंदी बनाने के लिए पूना की ओर चला—इसे विधि की विडंबना के सिवा और क्या कहा जा सकता है ?

अपने सिर पर मौत की काली छाया लिए वह यवन सरदार एक बड़ी सेना और अस्त्र-शस्त्र लेकर तुलजापुर के रास्ते, मार्ग के देव-मंदिरों, मूर्तियों तथा पवित्र स्थानों के नष्ट-भ्रष्ट करता, गायों तथा जनता को मारता और नगर-गाँव लूटता हुआ पूना की ओर रवाना हुआ। उसके आने तथा अत्याचारों का समाचार पाकर शिवाजी ने जवाली आकर प्रतापगढ़ के किले में अपना डेरा डाल दिया। अफजल को जब पता चला तो मार्ग बदलकर जवाली से कुछ ही दूर बाई नामक स्थान पर जाकर ठहर गया।

अफजल खाँ और शिवाजी में संवादों का आदान-प्रदान होने के बाद यह तय हुआ कि दोनों जवाली में मिलकर संधि की शर्तें तय कर लें। अफजल उन्हें उनके जीते हुए इलाके दिला देगा और शिवाजी बीजापुर की अधीनता स्वीकार कर लेंगे। पर दोनों अपनी-अपनी ओर से अपने लक्ष्य तथा मंतव्य में सतर्क थे। अफजल शिवाजी को अपने निकट बुलाकर धोखे से मार डालना चाहता था और शिवाजी उसको, उसके विश्वासघाती इरादों को धूल में मिला देना चाहते थे।

अनेक कटु अनुभवों ने शिवाजी को किसी भी शत्रु पर किसी भी मूल्य पर विश्वास न करने में दृढ़ बना दिया था। उन्होंने अफजल पर विश्वास तो नहीं किया, तब भी अपने गुप्तचरों तथा अफजल के दूत कण्णजी भास्कर को चतुरतापूर्वक अपनी ओर मिलाकर उसकी दुर्भावना को प्रमाणित कर लिया। वे सहसा ही किसी आशंका से प्रेरित होकर उसे हानि नहीं पहुँचाना चाहते थे, क्योंकि आशंकावश अच्छे इरादों का बुराई से बदला देना वे मनुष्यता के विरुद्ध समझते थे।

निर्णय के अनुसार अफजल खाँ जवाली आया और एक अलग खेमे में शिवाजी उससे अकेले मिलने के लिये गये। शिवाजी को आया देखकर अफजल बड़ी उत्सुकता से दोनों हाथ फैलाकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनको भेंटने के लिये बढ़ा। शिवाजी जी भी बढ़ गये। बस भेंट होते ही अफजल ने उन्हें अपनी बगल में कसकर दबा लिया और पीठ के पीछे बँधी तलवार निकालकर तुरंत उनके सिर पर वार कर दिया। पर इस वार का कोई प्रभाव शिवाजी पर नहीं हुआ। उल्टे उसने देखा कि शिवाजी का बायाँ हाथ उसके पेट चीरता हुआ निकल गया। उसने फिर तलवार की नोंक शिवाजी के पेट में घुसेड़ी। तब भी कोई असर न हुआ और शिवा की एक पैनी कटार उसकी कोख में घुस गई। अफजल की सारी आँतें बाहर निकल पड़ी और वह विश्वासघाती यवन सरदार जमीन पर गिरकर ढेर हो गया।

शिवाजी चलते समय शरीर में कवच और सिर पर पगड़ी के नीचे झिलम पहनकर गये। उन्होंने अपने कमरबंद अँगरखे के नीचे एक कटार और बाँये हाथ में बघनखा पहन रखा था। उनका इरादा अफजल को मारने का नहीं था। फिर भी उसके विश्वासघात का दंड देने के लिए वे यह सब प्रबंध करके ले गये। शत्रु से सतर्कता ही शूरवीरों को संसार में बड़े-बड़े काम करने के लिए सुरक्षित रखा करती है।

अफजल की मृत्यु और उसकी सेना की पराजय के बाद बीजापुर का आदिलशाह तो ठंडा पड़ गया, पर मुगल बादशाह औरंगजेब के हृदय में आग लग गई। वह दक्षिण में शिवाजी के विस्तार को दिल्ली पर खतरा समझता था। अतः उसने उन्हें बंदी बनाने का षड्यंत्र रचा। उसने जयसिंह नाम के एक हिंदू राजा को दूत बनाकर शिवाजी के पास भेजा। जयसिंह ने विश्वास दिलाया कि यदि वे उनके साथ चलकर औरंगजेब से मिल लें, तो वे उनको उससे महाराजा की उपाधि, जीते हुए इलाके और दरबार में एक ऊँचा पद दिलवा देंगे। शिवाजी ने इसे दिल्ली के बादशाह के निकट रहकर अपने विशाल मंतव्य के लिए एक अच्छा अवसर समझा और जयसिंह की बातों पर विश्वास कर लिया। सतर्कता से थोड़ी-सी असावधानी होते ही शिवाजी धोखा खा गए और आगरे में बंदी बना लिए गए।

जिस समय उनको चेत हुआ, उन्होंने अपने को आगरे के किले में बंदी पाया। किंतु उस असहाय तथा बंदी अवस्था में भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धीर-वीर शिवाजी ने आशा, उत्साह तथा विवेक का साथ नहीं छोड़ा और बराबर भय मानने के स्थान पर मुक्ति का उपाय सोचते रहे। सबसे पहले तो उन्होंने व्रत, उपवास तथा उपासना के बहाने बहुत-सा दान-पुण्य प्रारंभ किया। बहुत दिनों तक वे बड़े-बड़े टोकरे भरकर मेवा, मिठाई तथा फल दान करते और उपहार के रूप में दरबार में भेजते रहे। अंत में उन्होंने अपने बीमार होने के घोषणा की और यह भी कहला दिया कि उनकी हालत बहुत खराब है। शायद ही बचें। साथ ही अंतिम समय में बहुत-सा दान-पुण्य करने की बात भी कही। उनका पुत्र शंभाजी जो कि आगरे में ही नजरबंद था, पिता के दान-पुण्य की सामग्री का प्रबंध करने के लिये नियुक्त किया गया। वह बहुत-से फलों के तथा मिठाइयों के टोकरे पिता के पास ले जाता और उनके स्पर्श कराकर बाहर लाकर गरीबों को बाँट देता, कुछ समय तो बाहर-भीतर जाते-आते टोकरों की तलाशी होती रही। पर जब यह क्रम रात-दिन चलने लगा तो पहरेदार भी थककर लापरवाह हो गये। टोकरे यों ही बिना तलाशी के बाहर जाने लगे। तभी एक बार मौका पाकर शिवाजी तथा शंभाजी फलों की टोकरों में बैठकर कैद से बाहर निकल आये और सीमा पर अपने लोगों द्वारा रखे घोड़ों पर बैठकर आगरा से रास्ते बदलते हुए पूना जा पहुँचे। इस प्रकार पुरुष सिंह अपनी चतुरता से शत्रुओं के पंजे से बाहर निकल गये।

उसके बाद शिवाजी ने मुगलों का और बहुत-सा इलाका जीत लिया और दिल्ली पर आक्रमण करने की योजना बनाई। किंतु तभी देश के दुर्भाग्य से चैत्र शुक्ला नवमी, सम्वत् १७३७ को उनका स्वर्गवास हो गया। स्वर्गवास से पूर्व उनके राज्य की जनता तथा सरदार, सामंतों ने उनका विधिवत् एक विशाल हिंदू-राज्य के महाराजा के रूप में अभिषेक किया और वे छत्रपति महाराज शिवाजी के नाम से उस यवन-काल में एक स्वतंत्र हिंदू शासक तथा धर्म-रक्षक घोषित किये गये। अभिषेक के बाद उन्होंने पुर्तगालियों से वेसीन का क्षेत्र और अंग्रेजों से कर्नाटक छीनकर उनसे चौथ वसूल की।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिवाजी के बाद उनका पुत्र शंभाजी राजा हुआ। वह एक विलासी तथा कायर व्यक्ति निकला। यदि शंभाजी संयमपूर्वक अपने वीर पिता के पदचिह्नों पर चला होता, तो तभी ही भारत का इतिहास और ही तरह के नामों-कामों तथा घटनाओं के साथ लिखा जाने लगता।

जिस समय विधर्मी शासकों ने हिंदू-धर्म और भारतीय-संस्कृति को नष्ट करने का अभियान आरंभ किया और उसके फलस्वरूप हिंदुत्त्व की नींव खोखली होने लगी, तो देश के अनेक भागों में ऐसी स्वाभिमानी और स्वधर्माभिमानी आत्माओं का आविर्भाव हुआ था, जिन्होंने अपने स्वार्थ और कष्टों की चिंता छोड़कर अपनी समस्त शक्ति को जाति और देश की रक्षार्थ उत्सर्ग कर दिया। पर इन सबका मार्ग और कार्य-प्रणाली अपनी प्रकृति और साधनों के अनुरूप ही थी। ऐसी वीरात्माओं में हम महाराणाप्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविंदसिंह, दुर्गादास, महाराणा राजसिंह, महाराज छत्रसाल आदि के नाम ले सकते हैं। यद्यपि देशभक्ति और आत्म-त्याग की दृष्टि से इन सबका दर्जा प्रायः समान ही समझना चाहिए, पर उद्देश्य में सफलता प्राप्ति की दृष्टि से शिवाजी को प्रथम स्थान दिया जा सकता है।

पहली बात तो यह थी कि शिवाजी के अतिरिक्त अन्य जितने भी देशभक्तों के नाम हमने गिनाये हैं, वे पहले से किसी न किसी रूप में साधन-संपन्न थे। वे उच्च स्थिति के घरों में जन्मे थे और उनके पूर्वजों की महिमा के कारण ही जनता उनके प्रति भक्तिभाव रखती थी। पर शिवाजी महाराज सर्वथा नगण्य स्थिति में से उठे थे और उनके पूर्वजों में भी कोई ऐसा न था, जिसने महान् कार्य करके ख्याति प्राप्त की हो। उनके पास धन-सपत्ति के नाम पर भी कोई बड़ी जायदाद या खजाना न था। विद्या, शिक्षा, अनुभव की दृष्टि से भी उनको कोई विशेष सुयोग प्राप्त नहीं हुआ था। पर इन सब अभावों के होते हुए भी उन्होंने केवल अपनी सूझ-बूझ और साहस के बल पर कई बड़े-बड़े राज्यों और दिल्ली की बादशाहत का मुकाबला किया और अपने अल्प-साधनों से ही सबको पीछे हटाते हुए अपने राज्य की जड़ जमा दी। उनका शासन-संगठन इतना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुदृढ और कार्यक्षम सिद्ध हुआ कि कुछ समय बाद उनके प्रतिनिधि पेशवाओं ने मुगल सल्तनत को जर्जर कर दिया और एक दृष्टि से भारतवर्ष के एक बड़े भाग को विदेशी शासन के प्रभाव से मुक्त कर दिखाया। यद्यपि उसी अवसर पर अकस्मात् योरोपियन लोगों का हस्तक्षेप हो जाने से नक्शा बदल गया, पर महाराज शिवाजी की नीति की प्रशंसा और उनकी महानता आज तक अक्षुण्ण है।

महाराज शिवाजी की इस अनुपम सफलता का एक प्रधान कारण उनकी समयानुकूल कार्य-प्रणाली और परिस्थिति के अनुसार चलने का गुण था। उस समय जहाँ क्षत्रिय वीर प्राचीन परंपरा का ध्यान रखकर अपने से कई गुनी बादशाही सेना का मुकाबला सामने आकर करते थे और क्षत्रियत्त्व की आन का पालन करने के नाम पर परिस्थिति का ख्याल न करके सबके सब वहीं पर कट मरते थे, वहाँ शिवाजी ने अपने साधनों को अल्प देखकर आरंभ में छापामार युद्ध की नीति का अवलंबन किया। इसका परिणाम यह हुआ कि महाराष्ट्र के पहाड़ी इलाके में बड़ी-बड़ी सरकारी सेनायें भी शिवाजी के मुट्ठी भार सैनिकों से मात खा गई। इससे उसके सहायकों का उत्साह बढ़ता गया और अन्य स्थानों के हिंदुत्त्व के अभिमानी भी अप्रत्यक्ष रूप से उसके सहायक बनते चले गये, जिससे अंत में शत्रु के हौसले पस्त हो गये और उसने शिवाजी के प्रभाव के इलाके को छोड़ देने में ही अपनी खैर समझी। दूसरी विशेषता थी उनकी पूर्ण निस्पृहता। उन्होंने अपना समस्त राज्य समर्थ रामदास की झोली में धर्म रक्षा के लिए अर्पण कर दिया था और स्वयं एक व्यवस्थापक के रूप में उसका संचालन करते थे। ऐसी निष्काम भावना तथा समय सूचकता से कार्य करने का ही परिणाम था कि—वे मातृ भूमि के उद्धार में इतनी अधिक सफलता प्राप्त कर सके।

❐ ❐

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org